दृष्टि The Vision

छत्तीसगढ़ गणतंत्र दिवस की झाँकी

चर्चा में क्यों?

26 जनवरी को **गणतंत्र दिवस** परेड से पहले 22 जनवरी को नई दिल्ली के **नेशनल थिएटर** में छत्तीसगढ़ की **'बस्तर की आदिम जन संसद: मुरिया दरबार'** की झाँकी प्रदर्शित की गई।

मुख्य बिंदु:

- आदिम काल से आदिवासी समाज की **लोकतांत्रिक चेतना को प्रदर्शित करने के लिये झाँकी की सराहना की गई।**
- छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री ने झाँकी बनाने वाली टीम की सराहना करते हुए कहा कि **यह विषय आदिवासी समाज के लिये महत्त्वपूर्ण है और यह विश्व को उनकी लोकतांत्रिक परंपराओं से परिचित कराएगा।**
- 'बस्तर की आदिम जन संसद: मुरिया दरबार' **की झाँकी जो नई दिल्ली के** कर्तव्य पथ **पर गणतंत्र दिवस परेड का हिस्सा होगी, उसमें मुरिया-दरबार और लिमिऊ-राजा शामिल हैं, जो जगदलपुर की बस्तर-दशहरा परंपरा का हिस्सा हैं।**
    - इसमें टेराकोटा शिल्प, लोगों की शक्ति का प्रतीक और **बस्तर में सांस्कृतिक विकास** को प्रदर्शित करता है।
    - यह छत्तीसगढ़ के एक ज़िले बस्तर में सामुदायिक निर्णय लेने की **600 वर्ष पुरानी आदिवासी परंपरा को भी प्रदर्शित** करता है।

मुरिया-दरबार

- बस्तर में मुरिया दरबार की शुरुआत 8 मार्च 1876 को हुई थी, जिसमें सिरोंचा के डिप्टी कमिश्नर मेक जॉर्ज ने मांझी-चालकियों को संबोधित किया था।
- बाद में लोगों की सुविधा के अनुसार इसे बस्तर दशहरा का अभिन्न अंग बना दिया गया, जो परंपरा के अनुसार 145 वर्षों तक जारी रहा।

लमिऊ राजा

- यह **प्राकृतकि पत्थर का सहािसन** है जो बस्तर की लोकतांत्रकि जड़ों का प्रतीक है और बड़े डोंगर, गादीराव डोंगरी के भीतर स्थति है।
- प्राचीन समय में, जब इस क्षेत्र में शासक का अभाव था, तो समुदाय महत्त्वपूर्ण मामलों पर वचािर-वमिर्श करने के लयि इस पत्थर के "सहािसन" के आसपास इकट्ठा होते थे।
- एक अनुष्ठान शुरू हुआ जहाँ प्रतीकात्मक सहािसन के ऊपर रखा गया एक नींबू नर्णिय लेने का केंद्र बदिु बन गया।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/chhattisgarh-republic-day-tableau